और शुक्रिए के तौर पर उसने खुदा से आपके लिये दुरूद (सलवात) की दरख़्वास्त की *"अल्ला हुम्–म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन व अ़ला आले मुहम्मद "*

अब वह ख़ास ख़ुदा के ख़्याल से ज़रा नीचे उतर कर रिसालत की सतह पर पहुंच चुका था जैसे दरबार से रुख़सती के सिलसिले में खुदा के अर्श से पलट कर नबूव्वत की कुर्सी के पास आ गया था, तो उसने रसूल स0 की तरफ़ रुख़ करके खुलूस के साथ आपकी वारगाह में सलाम पेश किया *"अस्सलामु अलै–क ऐयुहन् नबीयु व रहमतुल्लाहि व ब–र–कातुह।"*

मालूम होता है कि जैसे अल्लाह के तेज के सदन में रसूल स0 के सम्मान की कुर्सी है जिन्हें अदब के साथ सलाम करता हुआ बाहर आ रहा है। अब यहाँ से हटा और डयोढ़ी के पास आया, तो बन्दों और अपने बराबर वालों का झुरमुट नज़र आया तो कहने लगा *"अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन।' अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहे व ब–र–कातुह।"*

आम तौर पर ये दोनो सलाम कहे जाते हैं मगर इनमें वाजिब एक ही है। मैं इनकी बनावट की वजह से ये समझता हूं और कुछ हदीसों से भी ये बात साबित होती है कि पहला सलाम *" अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन।'* सारे मुसलमानों के लेहाज़ से है जो तसव्वुर की दुनिया में उस वक़्त उसके सामने होते हैं चाहे नमाज़े जमाअत हो या फ़रादा (अकेले की नमाज़)। इसलिये सलाम की हालत छिपी हुई हैसयत रखती है और दूसरा सलाम *"अस्सलामों अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बराकातोह।"* जमाअत की नमाज़ के लिये है, इमाम की ज़बान से उसके पीछे नमाज़ पढ़ने वाले लोगों के लिये है। इसलिये उसमें उन्हें बुलाने का अन्दाज़ है।

ये है इस्लाम की 'नमाज़' जो खुदा के भक्त होने को ज़ाहिर करने के साथ–साथ उसके बन्दों के साथ भी शिष्टाचार अच्छे तरीक़े और अच्छे मेल–जोल को सिखाने वाली है। कहीं मुसलमान इस ख़ूबसूरत इबादत को सच्चाई की पहचान के साथ पूरा करें और इसको सिर्फ़ एक रस्मी बात समझ कर भुलावे, बेसुधी और रवा–रवी के कोहरे में न छिपा दें।

¼t kjh-------------------½

egrjekrut he t gjkud eh 'duht +vdcjijh*

कौन ला सकता है अहमद की क़यादत का जवाब
दो जहां में है कहां उनकी क़यादत का जवाब

दुश्मनों के साथ भी हर वक़्त है हुस्ने सुलूक
है यक़ीनन ग़ैर मुम्किन इस शराफ़त का जवाब

क़ौले ज़र्रीं पर फ़िदा होने लगे हैं जानो दिल
कौन देगा इस फ़साहत इस बलाग़त का जवाब

आसमां तक सरनिगूं है देखकर रिफ़अत तेरी
ख़ल्क़ में मुम्किन नहीं तेरी जलालत का जवाब

संगे दिल क्या पत्थरों ने पढ़ लिया कल्मा तेरा
बस में दुनिया के नहीं तेरी हुकूमत का जवाब

सारी दुनिया की निगाहें आप पर मरकूज़ हैं
क्या कभी मुम्किन नहीं है ऐसी सूरत का जवाब

दे गये हैं दौलते कुरआनो इतरत मुस्तफ़ा[स0]
दोनों आलम में नहीं है ऐसी दौलत का जवाब

ऐ कनीज़े सादिक़े आले नबी यसरिब को चल
खुल्द में रहना भी कब है इस सुकूनत का जवाब

+++

^uny fgUnh*

बरबरीयत होती है मेहरो वफ़ा के नाम पर
छिन गयी तहज़ीब तक अद्लो अता के नाम पर
टुकड़ टुकड़े हो रहीं हैं मुत्तहिद नस्लें तमाम
तफ़रिक़ा मेराज पर है एकता के नाम पर

+++